पाठ - 4

महर्षि वाल्मीकि

अयोध्या के समीप तमसा नदी के किनारे महर्षि वाल्मीकि तपस्या करते थे। वह प्रतिदिन प्रातः स्नान के लिये नदी जाया करते थे। एक दिन जब वह स्नान करके लौट रहे थे, तो उन्होंने एक क्रौंच पक्षी के जोड़े को क्रीड़ा करते देखा। वाल्मीकि मुग्ध होकर देख ही रहे थे कि एक व्याध ने तीर चला कर जोड़े में से एक पक्षी को मार दिया। दूसरा पक्षी पास के वृक्ष पर बैठकर अपने मरे हुये साथी को देखकर विलाप करने लगा। इस करुण दृश्य को देखकर वाल्मीकि के मुख से स्वतः कविता का स्रोत फूट पड़ा ।

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।

यत्क्रौ॰चमिथुनादेकम् अवधीः काममोहितम्।।

(अर्थात्-हे व्याध! तुमने काम में मोहित क्रौंच पक्षी के जोड़े में से जो एक को मार दिया है, इसलिए तुम चिर स्थाई प्रतिष्ठा (शान्ति) को नहीं प्राप्त कर सकोगे।)

वाल्मीकि ने आगे चलकर विश्व प्रसिद्ध महाकाव्य रामायण की रचना की। महर्षि वाल्मीकि का जन्म सहस्रों वर्ष पूर्व हुआ था। वह कब और कहाँ जन्में, इस बारे में कुछ भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है। बचपन में महर्षि वाल्मीकि का नाम 'रत्नाकर' था। ईश्वरीय प्रेरणा से वह सांसारिक जीवन (मोह) को त्याग कर परमात्मा के ध्यान में लग गए। उन्होंने कठोर तपस्या की। तपस्या में वह इतने लीन हो गए कि उनके शरीर पर दीमक ने अपनी बाँबी (वल्मीक) बना लिया। इसी कारण उनका नाम वाल्मीकि पड़ा।

तमसा नदी के किनारे स्थित आश्रम में रहकर उन्होंने कई रचनाएँ की । प्रसिद्ध ग्रंथ 'रामायण' की भी रचना यहीं पर की गई। रामायण में वर्णित कथा जैसा सुंदर, स्पष्ट और भक्ति-भावपूर्ण वर्णन दूसरे कवि के काव्य में नहीं मिलता है। वाल्मीकि को संस्कृत साहित्य का आदि कवि माना जाता है। वाल्मीकि-रामायण में सात काण्ड (खण्ड) हैं। उन्होंने अपनी इस रचना में राम के चरित्र का ही नहीं बल्कि उस समय के समाज की स्थिति, सभ्यता, शासन-व्यवस्था तथा लोगों के रहन-सहन का भी वर्णन किया है। रामायण को त्रेता युग का इतिहास-ग्रंथ भी माना जाता है।

महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में पुरुषोत्तम श्री राम के पुत्रों लव-कुश का जन्म हुआ था। उनकी शिक्षा-दीक्षा महर्षि की देख-रेख में हुई थी। उन्होंने अपने ज्ञान और शिक्षा-कौशल से लव-कुश को अल्प आयु में ही ज्ञानी बनाया और युद्ध-कला में पारंगत कर दिया था।

श्री राम के अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा जब महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में पहुँचा तो लव-कुश ने उसे बाँध लिया। उन्होंने लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न की सेना को पराजित कर अपनी असीम शक्ति तथा प्रतिभा का परिचय दिया। उन दोनों ने श्री राम को भी अपनी वीरता और बुद्धि से हतप्रभ कर दिया। उनका यह पराक्रम महर्षि वाल्मीकि की शिक्षा-दीक्षा का ही परिणाम था।

महर्षि वाल्मीकि कवि, शिक्षक, ज्ञानी तथा त्रिकालदर्शी ऋषि थे। रामायण ग्रंथ भारत का ही नहीं बल्कि सारे संसार की अनमोल कृति है। महर्षि वाल्मीकि को उनकी नीति, शिक्षा, दूरदर्शिता तथा कृतियों के कारण आज भी आदर और सम्मान के साथ याद किया जाता है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(क) किस घटना को देखकर वाल्मीकि के मुख से कविता फूट पड़ी ?

(ख) वाल्मीकि ने अपने ग्रंथ रामायण में किस कथा का वर्णन किया है ?

(ग) वाल्मीकि रामायण में कितने काण्ड (खण्ड) हैं ?

(घ) वाल्मीकि को क्यों याद किया जाता है ?

2. वाक्य पूरा कीजिए -

(क) अयोध्या के समीप तमसा नदी के किनारे .....।

(ख) ईश्वरीय प्रेरणा से उन्होंने सांसारिक जीवन (मोह) को त्यागकर.....।

3. सही या गलत वाक्यों पर (√) अथवा (X) चिह्न लगाएं-

(क) वाल्मीकि के बचपन का नाम रत्नाकर था।

(ख) उनके शरीर पर दीमक ने बाँबी (वल्मीक) बना लिया। इसी कारण उनका नाम वाल्मीकि पड़ा ।

(ग) उन्होंने रामचरितमानस की रचना की।

(घ) वाल्मीकि ने श्रीराम के अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा बाँध लिया था ।

शिक्षकों के लिए-

शिक्षक कक्षा में अन्य ऋषि-मुनियों की चर्चा/कहानी बच्चों को सुनाएँ।